जी.एस. यूनिवर्सिटी का कुलगीत

डॉ. यतीश अग्रवाल

ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम्
ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम्
मिटेगा अज्ञान का अंधेरा
होगा सच का सवेरा

उजाले हर क्षण यहां मुस्कराएं
जगमगाएं सत्य में मन-प्राण
ये ही है ब्रह्म का रूप साकार
ये ही दे नई दिशाओं को आकार

यह विश्वविद्यालय भूमि पावन
ये अपने जी.एस. की जो धरा है
ये ही है ब्रह्म का रूप साकार
ये ही दे नई दिशाओं को आकार

यह विश्वविद्यालय भूमि पावन
ये अपने जी.एस. की जो धरा है
रहे आशीषों से भरी
सच होती आशाओं से सजी

कर्त्तव्य की राह पर चलते चलें हम
सबके सुख के सपने बुनें हम
मानवता के गीत गाते
प्रेम-करुणा के पंख लिए
आओ चलो अब उड़ चलें हम

होगा सच का सवेरा
मिटेगा अज्ञान का अंधेरा
ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम्
ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम्

ये ही है ब्रह्म का रूप साकार
नई दिशाओं का यह विस्तार
मानवता का संदेश लिए
हम सब आगे बढ़ते जाएं!

वर्ष 2025 में रचित यह गीत जी.एस. यूनिवर्सिटी के
वाइस चांसलर डॉ. यतीश अग्रवाल द्वारा लिखा गया.